आतुरप्रत्याख्यान प्रकीर्णकम् (फोल्डर नं. ००२५६२)

मूल – श्री वीरभद्रगणिमहाराजा

सम्पादक – श्री कीर्तियशसूरिजी

प्रकाशक-सन्मार्ग प्रकाशन अहमदाबाद

आवृत्ति-१, प्रकाशन वर्ष-२०१०, पृष्ठ-४००

मुख्य टाईटल

પ્રકાશકીય

विषयमार्गदर्शिका

ग्रन्थसमर्पणम--- ६

पू. आ. श्री. विजयगुणयशसूरीश्वराणां जीवनम --- ७

प्रास्ताविकम --- १६

व्यख्याकारादीनां परिचय -- २६

प्रत – दर्शनम--३१

खण्ड – १

पू. आ. श्रीभुवनतुङ्गसूरिकतवृत्तिना

पू. आ. श्रीसोमसुन्दरसूरिकृतावचूर्या

पू. आ. श्रीगुणरत्नसूरिकृतावचूर्या च सह

श्री आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकम

खण्ड – २ - प्रकीर्णकोक्तदुर्ध्यानाऽन्तर्गतदृष्टान्तसमुच्चय --- ९७

खण्ड – ३ - परिशिष्ट

परिशिष्टानि – १ -७

परिशिष्टम – १ मूलगाथा – बालावबोधो – भावानुवादश्च । ----------------------------------- २८९

परिशिष्टम – २ श्रीउपदेशप्रासादान्तर्गतं त्रिषष्टिदुर्ध्यानम । ------------------------------------ ३२१

परिशिष्टम – ३ लहु – आउरपच्चक्खाणं – १ । --- ३२६

परिशिष्टम – ४ लहु – आउरपच्चक्खाणं – २ । --- ३२९

परिशिष्टम – ५ त्रिषष्ठि (६३) ध्यानकथाप्रकीर्णकम । --- ३३२

परिशिष्टम – ६ मूलश्लोकाऽकारादि । --- ३३५

परिशिष्टम – ७ दिगम्बरीयमूलाचारतुलनागाथा । -- ३३६

Jain Education International 2010_02 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org